[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3467

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

# भारतीय सांस्कृतिक विरासत– राजस्थानी लोक संगीत

**सुश्री मालिनी काले**
सचिव अभिनव शिक्षा समिति
बांसवाड़ा राजस्थान

भारतीय संगीत का मूलाधार संगीत है। संगीत से ही भारतीय जीवन शैली अनुप्रेरित है। सृष्टि के निर्माण से मानव के ग्रंथ का कोई भी पृष्ठ ऐसा नहीं है जो संगीत से शून्य हो। जन्म लेते ही जो गीत सुने उसका संगीत जीवन पर्यन्त रग रग में रचता गया और अन्ततः इसी संगीत के अंतिम काल तक उसका सान्निध्य रहा। यह संगीत मानव शरीर की सत्ता का स्वरूप है।

**क्षिति, जल, पावक, गगन समीरा'**
**पंच रचित यह अधम सरीरा।**

यही पंच तत्व जिसका कण–कण बूंद–बूंद लहर–लहर प्रकृति संगीत है जिसमें क्रम है, लयबद्धता है, विशालता है, मधुरता सौंधी खुशबू है। वैज्ञानिकों ने भी इस बात की पुष्टि की है कि इन पांच तत्वों में निहित प्रकृति के आधार में नाद व्याप्त है। भारतीय संस्कृति में प्रकति प्रदत्त ये पंच तत्व संगीतमय साकार होकर भारतवासियों के तन मन में प्रतिष्ठित है। भारतीय संगीत इन्द्र धनुषी रंग– सप्तसुरो में अनेकता में एकता का प्रतीक है।

सम्पूर्ण भारत में पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण विभिन्न प्रान्तीय लोक भाषा के लोक गीत, नृत्य, वाद्य अक्षुण्ण धरोहर के रूप में विद्यमान है। ये हमारी संस्कृति के परिचायक है। ये हमारी विरासत है हमारी आत्मा है, हमारा आध्यात्म है। हमारे लिए सम्मान है, राष्ट्र का गौरव है, हमारी शान है, हमारी मर्यादा है।

भारतीय लोक संगीत के पूजक महात्मा गांधी के शब्दों में– संगीत जनजन की भाषा है। यह हमारी संस्कृति का एक पहरेदार है। मेरा मानना है कि लोक द्वारा निर्मित, लोक द्वारा प्रयुक्त संगीत ही लोक संगीत है। यही संगीत देशी है। लोक धुनें स्वतः स्फूर्त निर्मित होती है। इन्हीं में से तो शास्त्र संगीत बना है। शास्त्रीय संगीत इन्ही के रागो का विस्तृत विकसित रूप है।
विश्व पटल पर भारत की इस लोक संगीत परम्परा का परचम विदेशी फहरा रहे हैं और हमारी नवपीढ़ी हमारे पाठ्यक्रम ? प्रश्न चिन्ह बने है।।

'राजस्थान में रहती हो, मराठी हो, बागड़ी संगीत में शोध करती हो ?' मेरे गुरू मुझे कहते है – राजस्थानी लोक संगीत परम्परा के अनूठे रूप हमे संगीत में मिलते है। राजस्थान का 'आदि रंग' लोक संगीत के रूप में शास्त्र सम्मत – रागों में समा गया है। राजस्थान लोक राग रंग देखिये – राग मांड, राग फाग, राग सारंग पणिहारी, देस, पहाड़ी, मिश्र–काफी, हमीर, काफी, सोरठ। गीतों की शैलियां– बधावा, बना, बनी, कामण, सोहाग, ब्यावला, जवाई गीत, गाली, बना की घोड़ी, सेवरा, उबरण, वीरा, बतीसी, जच्चा, हालरा, घूमर, सालूड़ा, नृत्य गीत, कलाली, भांगडली, शिकार गीत, मनुहार, देवी देवता के गीत, वर्षा, सियाली, फाग, होरी, गणगौर, उनाला मजीलस, राती जगा आदि। इनके अतिरिक्त – तेजाजी, कलाजी, शीतला माता, ढोला मारू, तीज, विरहा, बारह मासा, राजस्थान की जन जाति परम्परा में वागड के भील, पाली सिरोही माउन्ट आबू, अम्बाजी के गरासिया और डूंगर पुर बाँसबाड़ा जिले के वागड़ लोक भक्ति गीत– एक अपार भंडार – प्रतिभा कर रहा है – खोजने की, संकलित करने की, शोध की, प्रकाशन की। राजस्थान के लोक गीतों की विविधता मे रस विभोर करने वाले नौ रसो में श्रृंगार रस, वीर रस, वात्सल्य रस, शांत रस, भक्ति रस, ओत–प्रोत है। भारत भू पर प्रान्तीय जीवन के इस विकास यात्रा मे ऐसे कितने ही राग रंग, संस्कार सम्पन्न, रीति–नीति, शिक्षा–दीक्षा भक्ति मोक्ष गीतों की निर्मिति – प्रचार प्रसार हो रहा है, हुआ है, होता रहेगा।

## लोक संगीत की विशेषताएँ

1. लोक संगीत व्यक्ति प्रतिभा सम्पन्न गीत है, जिनकी रचना सामाजिक परिवेश में होती है।
2. इन लोक गीतों में गेय–गायन शैली तथा नर्तनीय गुणों की प्रधानता होती है। लोक गीत जन मानस द्वारा रचे और गाये जाते है– वादन और नृत्य दोनो साथ–साथ।
3. इन्हे गाने के लिए पूर्वाभ्यास की आवश्यकता नहीं।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

4 ये कलाकार लोकशास्त्र, लोक गायन के स्वयं निर्माता हैं।
5 ये प्रत्येक जाति, धर्म, वर्ग विशेष की अपनी अलग धरोहर है।
6 ये प्रान्तीय, क्षेत्र विशेष की रचना है।
7 भौगोलिक वातावरण के अनुसार इनमें प्रकृति, मौसम रचा जाता है।
8 इनमें क्षेत्र विशेष के ऐतिहासिक तथ्य, घटनाएँ, प्रसंग नेता लीडर, समाज सुधारक, भक्त पंथ संत के गीत भी होते है।
9 लोक रूढ़ियां, परम्परा, रीति नीति– प्रत्येक वर्ग, जाति, समाज, परिवार के लोक गीत है।
10 ये लोक गीत भक्ति गीत रूप में धर्म, आस्था, विश्वास, अनुष्ठान देवी देवता के है।
11 क्षेत्र विशेष के उत्सव, मेले, पर्व के गीत है।
12 श्रम, यात्रा संबंधी गीत है।
13 पशु पक्षी, प्रकति, पेड़ पौधो की पुजा, प्रेरणा, फसल के गीत है।
14 बाल गीत, लोरी गीत है।
15 वेश भूषा, आभूषण, श्रंगार बात संवारना चोटी गुंथना के गीत है।
16 आरती– पूजा अर्चना के गीत।

इन सभी गीतों की सांगीतिक दृष्टि से स्वर ताल गायकी की अपनी अलग पहचान है–

1 लोक संगीत की स्वर ताल लय की विशेषता रसानुभूति पूर्ण होने से सहज ग्राहय हैं।
2 लोक संगीत सर्वकालिक, सर्व आयु वर्ग के लिए आकर्षित करने वाला है।
3 जीवन के प्रत्येक पहलू व स्थितियों से जुडे होने कारण उनमें हृदय स्पर्शिता हैं।
4 सरल स्वरावली, सरल शब्दावली, सहज भाव सम्प्रेषण के कारण आत्मसात हो जाते हैं।
5 लोक संगीत में सुख दुःख का प्रतिबिम्ब हैं।
6 भावपूर्णता के कारण वह पुराना नही होता।
7 लोक संगीत का काव्य पक्ष छन्द सौष्ठव संक्षिप्त होता है, पुनरावृत्ति पूर्ण होता है।
8 गायको की गायकी और श्रोता के बीच जुडाव होता है।
9 स्वरो के छोटे छोटे समूह रस–सिक्त प्रभावशाली होते हैं।
10 लोक गीत समूह गीत होते हैं। सभी गायक हैं– सम रस सम भाव होते हैं।
11 ताल का सरलतम रूप लयात्मकता का माधुर्य आकर्षक और मनभावन हो झुम उठना स्वाभाविक होता हैं।
12 गीत रचना तत्कालीक होती है– प्रासंगिक होती हैं।
13 लोक गीतों की गायन शैली ओवर लेपिंग– कॉयर होती हैं।
14 वंशानुपात– परम्परागत होते हैं उन्ही में वर्तमान परिस्थिति या तत्कालिक परिस्थिति में रचने की क्षमता होती हैं।
15 इनकी सहजता, आडम्बर रहित शास्त्र होते हुए भी तत्काल परिवर्तन ग्राहय होता हैं।
16 प्रायः सभी लोक गीतों के साथ नाच–वाद्य परस्पर जुड़े रहते हैं।

**राजस्थानी लोकगीत गायन शैली**
**राग मांड–**

केसरिया बाल्म आओनी,पधारो म्हारे देस!
पधारो म्हारे देसजी, पधारो म्हारे देस जी
केसरिया बालम,आसा हो,जोडी साजण
एजी हो मरूधर रा बालम आवोनी
पधारो म्हारे देस.....

केसर सूं पग धोवती सो भला पधारया पीव,
और बधाई कांई करूं, में पल पल वारूं जीव!
साजण आया ए सूखी, सोई कांई भेंट करूं,
थाल भरी गज मोतियां और एपर नैण धरूं।
मारू थारा देस में ,सो निपजे तीन रतन,
एक ढोलूं, दूजी मारवण और तीजो कसूमल रंग।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कागा सब्र तन खाइजो, सो चुन चुन खइजो मांस,
ये दो नैना मत खइजो, म्हाने पिया मिलन री आस।

**गणपति वंदना–**

छाजे छाजे नौपत बाजे, तो रणत भंवर जीं सूं
आवो जी विनायक छाजे नौपत बाजे जी राज.
आज विनायक जोशी जी के चाला
तो आछा लगन लिखवां ओ विनायक।
आज विनायक सोनी जी के चालां
तो आछा आछा गेहणाला मोलावां ओ विनायक।
आज विनायक भजाजी के चालां,
तो आछा आछा पडला मोलावां ओ विनायक।
आज विनायक साजनियां के चालां
ता आछा आछा बनडी परणावां ओ विनायक।